ख़ास ख़ोज-ख़बर

इसका जबड़ा इतना बड़ा होता था कि यह ऑर्निथोपॉड जैसे डायनासोरों को सीधे निगल जाता था

प्राचीन मगरमच्छ खा जाते थे डायनासोर, पेट में मिला अवशेष, नई खोज

● मंथन विदेश ब्यूरो

सिडनी। मगरमच्छ बड़े होते हैं लेकिन क्या वो इतने बड़े होते थे कि डायनासोर को खा जाते? लेकिन हाल ही में एक ऐसे प्राचीन मगरमच्छ का जीवाश्म मिला है, जिसके पेट में आधा पचा और आधा सुरक्षित डायनासोर है। पेट में मिला डायनासोर एक युवा ऑर्निथोपॉड हैं। यह दो पैरों पर भागने वाला शाकाहारी डायनासोर था। इसी डायनासोर की प्रजाति में डक-बिल्ड डायनासोर भी शामिल हैं। हम जिस मगरमच्छ की बात कर रहे हैं, वो ग्रेट ऑस्ट्रेलियन सुपर बेसिन में मिला है। यह जीवाश्म क्रेटेशियस कॉल का है। यानी 14.55 करोड़ साल से लेकर 6.95 करोड़ साल पुराने। इस मगरमच्छ के जीवाश्म में से पूंछ, पिछले पैर और पेल्विस वाला हिस्सा खत्म हो चुका है। लेकिन उसकी खोपड़ी और शरीर के अन्य हिस्सों के कंकाल सुरक्षित हैं।

यह प्राचीन मगरमच्छ अपनी मृत्यु के समय 8 फीट लंबा था। शोधकर्ताओं का मानना है कि अगर यह जीवित रहता तो और ज्यादा बड़ा होता। क्वींसलैंड के विंटन में स्थित ऑस्ट्रेलियन एज ऑफ डायनासोर म्यूजियम द्वारा जारी बयान के मुताबिक इस प्राचीन मगरमच्छ का नाम कोनफ्राकतोसूकुस सॉरोकतोनुस है।

इसका जबड़ा इतना बड़ा होता था कि यह ऑर्निथोपॉड जैसे डायनासोरों को सीधे निगल जाता था।

वैज्ञानिकों ने इसे यह नाम कोनफ्राकतोसूकुस सॉरोकतोनुस लैटिन और ग्रीक शब्दों को मिलाकर बनाया गया है। जिसका मतलब होता है डायनासोर किलर नाम मगरमच्छ के पेट में पड़े अवशेषों को देखकर आया। ब्रोकेन यानी टूटा हुआ इसलिए क्योंकि इसका जीवाश्म सुरक्षित नहीं है। साल 2010 में खनन के समय इसकी कुछ हड्डियां टूट गई थीं। लेकिन इस मगरमच्छ के पेट में डायनासोर की हड्डियां मिली थीं। ये प्राचीन मगरमच्छ यानी क्रोकोडिलियंस ट्राइएसिक काल में डायनासोरों के साथ रहते थे। यह 25.19 करोड़ साल से लेकर 20.13 करोड़ साल पहले की बात है। डायनासोरों के जीवाश्म पर मगरमच्छों के दातों के निशान और कुछ में फंसे हुए दांत भी मिले हैं। यानी मगरमच्छों को डायनासोरों को खाना अच्छा लगता था। पैलियोटोंलॉजिस्ट्स का मानना है कि क्रोकोडिलियंस की आंतों में ताकतवर एसिड होता था, जो डायनासोरों को पचा लेता था। नई स्टडी में यह खुलासा हुआ है कि प्राचीन मगरमच्छ आसानी से डायनासोरों को खा जाती थी। यह स्टडी गोंडवाना रिसर्च नाम के जर्नल में प्रकाशित हुई है। छोटे डायनासोरों की हड्डियां कमजोर होती थीं। इन्हें आसानी से पचाया जा सकता था। इनके जीवाश्म का अध्ययन एक्सरे, कम्प्यूटेड टोमोग्राफी से किया गया। इसके बाद डिजिटल थ्रीडी मॉडल बनाया गया। जीवाश्म में मिली डायनासोर की हड्डियां आज भी आपस में जुड़ी हुई हैं। डायनासोर उनके रोजाना के खाने में शामिल थे। ऑस्ट्रेलियन एज ऑफ डायनासोर म्यूजियम के रिसर्च एसोसिएट मैट व्हाइट ने कहा कि डायनासोर क्रेटेशियस काल में इकोलॉजिकल फूड वेब में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। मैट ने बताया कि हमारे पास ऐसे जीवाश्मों की कमी है कि हम तुलनात्मक स्टडी कर सकें। लेकिन जैसे ही हमें कोई इस तरह का जीवाश्म मिलता है तो हम उसका अध्ययन जरूर करेंगे।

पूरी दुनिया में फैल रहा 'Flatworm' खा जाएगा पौधे और फसलें

एक कीड़ा जो तबाह कर सकता है दुनिया, वैज्ञानिकों का दावा तेज़ी से फैल रही है संख्या

● मंथन विदेश ब्यूरो

लंदन। बीते कुछ सालों में पूरी दुनिया ने कई आपदाओं का सामना किया है। जो अभी थमी भी नहीं कि एक और समस्या खड़ी होने लगी। ये जल्द ही पूरे विश्व में अपनी तबाही का असर दिखाएगी। वैज्ञानिकों ने कीड़ों की दो ऐसी नई प्रजातियों के बारे में आगाह किया है जो हमारे बागीचों के जरिए जीवन को बर्बाद कर सकती है।

कोविड के जरिए हुई तबाही पूरी दुनिया में फैली। हर किसी को इसका सामना करना पड़ा। अब एक बार फिर ऐसी ही एक विपदा आने वाली है जो इंसान के शरीर को फिलहाल सीधे तौर पर तो कोई नुकसान नहीं पहुंचाने वाली मगर वो ऐसी परिस्थियों को जन्म दे सकती है जो हमारे आपके जीवन को प्रभावित करेगी ही। वैज्ञानिकों के मुताबिक कीड़ों को दो नई प्रजातियों का पता चला है तो बेहद घातक होने वाला है। इन कीड़ों की पहुंच फिलहाल को बागीचों तक ही पाई गई है। लेकिन जल्द कोई समाधान निकाला गया तो इसका असर जल्द ही हमारे किचन तक पहुंच कर हमारी जिंदगियों को प्रभावित कर सकता है। इसके बढने की तादात कितनी तेज है इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि इन कीड़ों का पता चलने के कुछ दिन के भीतर 3 नए देशों में इसे देखा गया है।

कीड़ा नहीं तबाही है ये! : इस नई आफत का नाम है फ्लैटवर्म लंबाई महज 3

सेमी। है। लेकिन इसकी सबसे बड़ी प्रजाति की लंबाई करीब 3 फीट तक हो सकती है। अभी फ्लैटवर्म ब्रिटिश बागानों में देखे गए हैं। मगर वैज्ञानिकों को आशंका है कि अगर ये तेजी से फैले तो जैव विवधता के लिए खतरा बन सकते हैं। पौधों के आयात निर्यात के चलते वर्म की 10 से ज्यादा प्रजातियां एशिया से दुनिया भर में फैलने लगी है। फ्लैटवर्म की नई प्रजातियां फ्रांस, इटली और अफ्रीका के एक द्वीप पर पाई गई है।

गर्मी बढ़ाएगी तादातः केंचुए और घोंघे इस कीड़े का प्रमुख आहार हैं। अब तक तो ये बगीचों में नज़र आ रहा है। मगर इसके विस्तार के साथ ही पूरी की पूरी खड़ी फसल को बर्बाद करने का माद्दा है इनमें।

रिसर्चर्स का दावा है कि जैसे-जैसे गर्मी बढ़ेगी वैसे-वैसे इन कीड़ों का प्रकोप भी बढ़ेगा और एक बार में हज़ारों की संख्या में निकल कर पूरी ज़मीन पर फैलने लगेगी।

स्पेशल खबर

वैज्ञानिकों का अनुमान है कि 9,200 प्रजातियां अभी भी अज्ञात हैं

वैज्ञानिकों के लिए रहस्य बनी हुई हैं पेड़ों की 9200 प्रजातियां, धरती पर मौजूद 73000 तरह के पेड़

● मंथन विदेश ब्यूरो

रोम। मानव आबादी और महासागर के बाद जो धरती बचती है उसके एक बड़े हिस्से पर जंगल मौजूद हैं। दुनिया में इंसानों की गिनती तो की जा सकती है लेकिन पेड़ों की गिनती करना लगभग असंभव है। एक नए अध्ययन में अनुमान लगाया है कि पृथ्वी पर पेड़ों की 73,000 प्रजातियां मौजूद हो सकती हैं जिसमें 9,200 ऐसी प्रजातियां शामिल हैं जिन्हें अभी खोजा जाना बाकी है। शोधकर्ताओं ने कहा कि इन अनदेखी प्रजातियों में से ज्यादातर दुर्लभ और बहुत कम संख्या में हैं और इनके मानव विकास से खतरे में होने की संभावना है।

दक्षिण अमेरिका में दुनिया की लगभग 43 प्रतिशत पेड़ प्रजातियां हैं। दुनिया की सबसे दुर्लभ पेड़ प्रजातियां भी यहां पाई जाती हैं। शोधकर्ताओं के अनुसार अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि महाद्वीप को वैश्विक उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय वनों के साथ-साथ पेड़ों के संरक्षण प्रयासों का केंद्र होना चाहिए क्योंकि ये जंगल कई दुर्लभ और अनदेखी प्रजातियों का घर हैं।

वैज्ञानिकों ने 64000 प्रजातियों का पता लगाया

यह अध्ययन तीन साल की एक अंतरराष्ट्रीय परियोजना का नतीजा है। इसमें लगभग 150 वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया और 64,000 प्रजातियों से संबंधित लगभग 4 करोड़ पेड़ों की पहचान की गई। बोलोग्ना विश्वविद्यालय के प्रोफेसर और अध्ययन के प्रमुख लेखक रॉबर्टो कैज़ोला गट्टी ने कहा पारिस्थितिक तंत्र की स्थिरता और कार्यक्षमता को बनाए रखने के लिए पेड़ों के विकास और विविधता की व्यापक जानकारी होना बेहद जरूरी है।

धरती पर मौजूद पेड़ों की 73,300 प्रजातियां

यह अध्ययन ग्लोबल फॉरेस्ट बायोडायवर्सिटी इनिशिएटिव के तहत किया गया है। इसमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और सुपर कम्प्यूटर्स का इस्तेमाल करके जटिल सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया। इस विश्लेषण और गणना के पूरे होने के बाद शोधकर्ताओं ने अनुमान लगाया कि हमारे ग्रह पर करीब 73,300 पेड़ प्रजातियां हैं। इसमें 14 फीसदी प्रजातियां अभी भी अज्ञात हैं।

---मंथन दृष्टि विज्ञापन दरें---

फुल पेज ब्लैक एण्ड व्हाइट	=	38000 रूपए
फुल पेज कलर	=	60,000 रूपए
हॉफ पेज ब्लैक एण्ड व्हाइट	=	19,000 रूपए
हॉफ पेज कलर	=	30,000 रूपए
क्वार्टर पेज ब्लैक एण्ड व्हाइट	=	10,000 रूपए
क्वार्टर पेज कलर	=	15,000 रूपए

नोट :
1. ब्लैक एण्ड व्हाइट विज्ञापन का भुगतान 42 रूपए प्रति वर्गसेमी की दर से रहेगा।
2. कलर विज्ञापन का भुगतान 65 रूपए प्रति वर्गसेमी की दर से रहेगा।

मंगल ग्रह का पहला नक्शा तैयार कर लिया गया है

नासा के रोवर ने पहली बार बनाया मंगल का नक्शा, कभी 'लाल ग्रह' पर मौजूद थीं ये चीजें

● मंथन विदेश ब्यूरो

वॉशिंगटन। मंगल ग्रह का पहला नक्शा तैयार कर लिया गया है। नया नक्शा ग्रह के संभावित विकास के सात अरब वर्षों पर एक नजर डालता है। नासा की 'इनसाइट' जांच का इस्तेमाल करते हुए वैज्ञानिकों ने लैंडर के उपकरणों की मदद से मंगल ग्रह का नया नक्शा तैयार किया है।

मंगल ग्रह के बारे में और जानने में मिलेगी मदद : इस उपकरण का इस्तेमाल सीधे ग्रहों की सतह के नीचे देखने के लिए किया जाता है। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि इस नई तकनीक से मंगल ग्रह के बारे में और ज्यादा जानने में मदद करेगी। हालांकि इसे अभी तक जारी नहीं किया गया है।

स्पेस डॉट कॉम के मुताबिक, ज्यूरिख (श्वज्ञ॥) में स्विस फेडरल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के भूभौतिकीविद् सेड्रिक श्मेल्ज़बैक ने बताया कि हमने एक ऐसी तकनीक का इस्तेमाल किया, जो यहां पृथ्वी पर विकसित की गई है।

दिखीं गहरी तलछट की अनदेखी परतें

इसका इस्तेमाल भूकंप के जोखिम के लिए स्थानों को चिह्नित करने और उपसतह संरचना का अध्ययन करने के लिए किया जाता है। ये तकनीक ,mbient Vibration पर आधारित है। नया नक्शा गहरी तलछट की अनदेखी परतों साथ ही ठोस लावा के मोटे जमाव को दिखाता है जो धूल की 10 फीट मोटी परत में ढका हुआ है। माना जाता है कि तलछट की परत सतह से लगभग 230 फीट नीचे है, जिसके दोनों ओर प्राचीन लेव की एक परत है।

मंगल पर विशाल महासागर और नदियां

उन्होंने कहा कि हम पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि यह परत कितनी पुरानी है, लेकिन यह हमें दिखाता है कि उस साइट पर भूवैज्ञानिक इतिहास वास्तव में उससे कहीं अधिक जटिल है, जितना हमने मूल रूप से सोचा था।

ख़ास साप्ताहिक फ़ोटो

उत्तराखंड की संरक्षक व पालक देवी, धारी देवी

बोलती तस्वीर धारी देवी को उत्तराखंड की संरक्षक व पालक देवी के रूप में माना जाता है। धारी देवी की मूर्ति का ऊपरी आधा भाग अलकनंदा नदी में बहकर यहां आया था तब से मूर्ति यही पर है। तब से यहां देवी 'धारी' के रूप में मूर्ति पूजा की जाती है। मूर्ति की निचला आधा हिस्सा कालीमठ में स्थित है, जहां माता काली के रूप में आराधना की जाती है। माँ धारी देवी जनकल्याणकारी होने के साथ ही दक्षिणी काली माँ भी कहा जाता है। /धारी देवी मंदिर श्रीनगर, उत्तराखंड से लगभग 15 किमी, रुद्रप्रयाग से 20 किमी और दिल्ली से 360 किमी दूर है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ. रजत सक्सेना द्वारा जेयन ऑफसेट वर्क्स, 119, पुल बोगदा, भोपाल (म.प्र.)-462023 से मुद्रित एवं म.न. 31, सेक्टर-1, शक्तिनगर, भोपाल, मध्यप्रदेश-462024 से प्रकाशित। प्रधान संपादक डॉ. रजत सक्सेना, संपादक- महेश प्रताप जड़िया, सभी विवादों का न्यायक्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा।